रंगीला गांधी

एल. आर. बाली



रंगीला गांधी

मूल लेखक

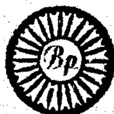
एल. आर. बाली

अनुवादक

सूर्यकांत शर्मा

❑ जो जीवित हैं उन के प्रति हमें आदर व्यक्त करना चाहिए.
जो मर चुके हैं, उन के प्रति हमें सच्चाई का प्रकटावा करना चाहिए.

वाल्टेयर



भीम पत्रिका पब्लिकेशंज़

डॉ. अंबेडकर मार्ग, जालंधर-144003 (भारत)

मूल्य : 6 रुपये

1

महात्मा गांधी (मोहनदास कर्मचन्द गांधी) की उसके जीवन काल में डॉ. भीमराव अंबेडकर, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, श्री विट्ठल भाई पटेल, लाला लाजपत राय, श्री सी.आर. दास, शहीद भगत सिंह तथा अन्य क्रांतिकारियों ने कड़े शब्दों में आलोचना की. परन्तु गांधी जी की हत्या के बाद उसे पूजनीय देवताओं की पंक्ति में शामिल कर दिया गया. साम्यवादी (Communist) जो कभी महात्मा गांधी को पूंजीपतियों का प्रतिनिधि कहा करते थे, वे उस संबंध में अब मौन हैं क्योंकि चुनाव और वोट बैंक ने उनकी आवाज़ बंद कर दी है. हां, (मार्क्सवादी लेनिनवादी) कम्युनिस्ट गांधी की कड़े शब्दों में आलोचना अवश्य करते हैं क्योंकि वे उसे क्रांति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा समझते हैं. **डॉ. अंबेडकर** की विचारधारा को अपनाते हुए जीवन पथ पर अग्रसर होने वाले लोग गांधी के सिद्धांतों, गांधीवाद व गांधी दर्शन की कड़े शब्दों में आलोचना करते हैं. इसी कारण वे गांधीवादियों के क्रोध का शिकार हो रहे हैं और परिणामस्वरूप चुनाव में हारों व सामाजिक तिरस्कार को निरन्तर सहन कर रहे हैं.

अंबेडकरी और कुछ थोड़े से साम्यवादियों को छोड़ कर भारत के अन्य राजनैतिक दल यदि वास्तव में गांधी के सिद्धांतों को पूर्णतः आत्मसात् नहीं कर सके तो भी वे गांधीवाद की आड़ में अपना राजनैतिक हित खोज रहे हैं. गांधी का सिंबल पाकर अपनी राजनैतिक नैय्या को पार लगाने का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं. भारतीय जनता पार्टी (पुराना जन संघ) के द्वारा महात्मा के व्यक्तित्व को अपनाना और उसके द्वारा गांधियाई 'समाजवाद' का दम भरना यह प्रमाणित करता है कि गांधी किसी के भी अनुरूप हो सकता है, ठीक बैठ सकता है-वह कांग्रेसी, संघी (जन संघ) लोहिया समाजवादी और जनता दल इत्यादि किसी के साथ भी मेल खा सकता है; उसका किसी के साथ भी साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है. **सच्चाई तो यह है कि गांधी बहुत बड़ा**

पाखण्डी, ढोंगी, पूंजीपतियों व विशेष अधिकारियों का रक्षक, मजदूरों व दलितों का दुश्मन, क्रांतिकारी देश-भक्तों का शत्रु और समाजवाद का कट्टर विरोधी था.

हमारे इस कथन की पुष्टि भारतीय रुढ़िवादियों व पूंजीपतियों की ओर से आम करके और अमरीका वासियों की ओर से विशेष करके गांधी जी की विचारधारा व गांधी दर्शन को विश्वव्यापी बनाने और उसे स्थायी रूप प्रदान करने के प्रयास हैं. भारत और अमरीका दोनों देशों के गांधीवादी यानी गांधी-भक्त करोड़ों रुपये फिल्मों व अन्य प्रचार साधनों द्वारा खर्च करके गांधी जी के जन-कल्याणकारी कार्यक्रम को लोकप्रिय बना रहे हैं ? वे केवल यही चाहते हैं कि सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोग दासता का जीवन जीते रहें और अपने मालिकों व प्रशासकों के प्रति अपनी रोष-भावना का पूर्णत: परित्याग कर दें, अपने मालिकों-पूंजीपतियों के विरुद्ध क्रांति की बातें करना छोड़ दें. जो कुछ पूंजीपतियों की ओर से दिया जा रहा है उसे अपना भाग्य (?) समझते हुए चुपचाप स्वीकार करते रहे. गांधीवादी मज़हब और अहिंसा की अफीम देकर जन-साधारण का विशेषत: सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों का शोषण करना चाहते हैं.

महात्मा गांधी के वास्तविक स्वरूप से सुपरिचित होने के लिए उनके समग्र जीवन दर्शन पर गहन चिंतन एवं शोध की आवश्यकता है. इस लघु पुस्तिका में गांधी जी का वास्तविक चेहरा व चरित्र प्रस्तुत किया गया है, यदि समय मिला और साधन उपलब्ध हुए तो गांधी दर्शन यानी गांधीवाद के अन्य पक्षों पर भी प्रकाश डाला जाएगा.

2

हिन्दू धर्मोपदेशक व सारा संत समुदाय हमें काम से बचने के लिए इन्द्रियों के दमन की बात कहते हैं परन्तु स्वर्ग में अलौकिक नृत्य प्रस्तुत करने वाली अति विशिष्ट अप्सराएं तथा शची (इंद्र की पत्नी) की विद्यमानता, विष्णु के पास लक्ष्मी और शंकर के पास पार्वती तथा राम के पास सीता और कृष्ण की असंख्य प्रेमिकाएं इस मत का प्रबल समर्थन करती हैं कि **कामवासना**

से मुक्त तो हिन्दू देवी–देवता भी नहीं हैं और यदि वे वास्तव में कामवासना से मुक्त होते तो उन्हें पत्नियों व अप्सराओं की आवश्यकता ही क्यों पड़ती. वास्तव में उन्मुक्त यौनाचार लगभग प्रत्येक हिन्दू देवी–देवता की विशेषता **रही है.** इतिहास में इस प्रकार के कुछ स्पष्ट उदाहरण देखे जा सकते हैं :

> **"कृष्ण ने राजा भीष्म की बेटी को छला, अर्जुन को कुंती ने नियोग द्वारा उत्पन्न किया, ब्रह्मा ने सन्ध्या के साथ बलात्कार किया, इंद्र ने गौतम (ऋषि) की पत्नी अहल्या का शील भंग किया, विष्णु ने बिंदा की इज्जत लुटी, गुरु बृहस्पति ने गर्भवती ममता के साथ मुंह काला किया, विश्वामित्र ने मेनका के साथ छल किया."**

जब हिन्दू देवी–देवताओं द्वारा उन्मुक्त कामाचार–उन्मुक्त यौनाचार एक आम बात हो, रंगीलापन उनका एक आम स्वभाव हो, तो ऐसे में, बीसवीं शताब्दी के महात्मा अर्थात् मोहनदास कर्मचंद गांधी इससे अछूते कैसे रह सकते थे; यदि कृष्ण रास लीला करते रहे तो महात्मा गांधी **"ब्रह्मचर्य प्रयोग"** अर्थात् ब्रह्मचर्य संबंधी प्रयोगों की आड़ में उन्मुक्त कामाचार क्यों न करतें ? आनंद क्यों न लेते ? यदि वे ऐसा न करते तो उनका महात्मापन कैसे सिद्ध होता ? कैसे उन्हें पक्के महात्मा कहा जाता ?

सनातनी हिन्दू के लिए मनु के आदेश

गांधी जी स्वयं को सनातनी हिन्दू कहते थे और हिन्दू धर्म ग्रंथों व सनातन परम्परा में उनका अटूट व दृढ़ विश्वास था. मनुस्मृति एक हिन्दू को कुछ विशेष बातें अपनाने का निर्देश करती हैं. कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

मात्रा स्वस्त्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामोः विद्वांसमपि कर्षति॥

(मनुस्मृति, अध्याय 2, श्लोक 215)

अर्थात् : पुरुष (युवति), माता, बहन और पुत्री के साथ कभी भी एकांत में न रहे क्योंकि बलवान्, इन्द्रियां विद्वानों को भी वश में कर लेती हैं.

स्वभाव एष नारीणां नराणामिह दूषणम्।
अतोऽर्थान्न प्रमाद्यन्ति, प्रमदासु विपश्चितः॥

(मनुस्मृति, अध्याय 2, श्लोक 213)

अर्थात् : स्त्रियों का यह स्वभाव है कि इस संसार में अपने शृंगारिक आकर्षण सौन्दर्य व अदाओं के द्वारा-पुरुषों में बुराइयां उत्पन्न कर देती हैं. इसलिए विद्वान पुरुष स्त्रियों के संबंध में (पूर्णतः सचेत रहते हुए) उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण अपनाते हुए सदा उनसे प्रथक् रहते हैं.

मनु के आदेशों का पालन करते हुए गांधी जी को स्त्रियों के साथ सहवास नहीं करना चाहिए था. मनु के कथनानुसार स्त्रियों से स्वयं को दूर रखते. सनातन परंपरा का पालन करते हुए वे उनके साथ एकांतवास न करते. गांधी जी संत समुदाय के प्रशंसक थे. नारी-संग के संबंध में कबीर जी लिखते हैं :

नारी की झांई पड़त, अंधा होत भुजंग।
कह कबीर तिन की गति, जो नित नारी संग॥

अर्थात् : नारी की छाया/परछाई पड़ने पर सांप भी अंधा हो जाता है. कबीर जी कहते हैं कि उनकी क्या गति होगी (क्या हाल होगा) जो सदा नारी-संग रहते हैं, सदा स्त्रियों के साथ रहते हैं.

गांधी जी न केवल स्त्रियों के साथ एकांतवास करते थे बल्कि उन्हें स्पर्श करते थे, निर्वस्त्र होकर उनसे मालिश करवाते थे और लड़कियों को निर्वस्त्र करके अपने साथ सुलाते थे.

गांधी और उनका ब्रह्मचर्य

गांधी जी ने अपने ब्रह्मचर्य-प्रयोगों की व्याख्या इस प्रकार की है :

"ब्रह्मचारी का लिंग अन्य ही प्रकार का दिखाई देने लगेगा. यह कहा जाता है कि नामर्द पुरुष अपने लिंग को खड़ा करने की इच्छा करते हैं. परन्तु वे ऐसा नहीं कर पाते. इसके बावजूद उनका वीर्य स्वखलित होता है परन्तु अभ्यास से प्राप्त की गई नामर्दी जिसमें कामवासना शांत हो जाती है और जिसमें वीर्य-विसर्जन एक प्राक्भूत शक्ति में बदल दिए जाते हों (बदल दी जाती हो), प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होनी चाहिएं."

(**संदर्भ :** अंग्रेज़ी पुस्तक 'महात्मा गांधी और उनके भक्त' पृष्ठ 182 लेखक वेद महता, न्यूयार्क अमरीका)

गांधी जी अपने ब्रह्मचर्य प्रयोगों के संबंध में आगे लिखते हैं :

"मेरे ब्रह्मचर्य का अर्थ इस प्रकार है : ऐसा व्यक्ति जो लगातार भगवान् में ध्यान लगाकर इस योग्य हो गया है कि वह निर्वस्त्र नारियों के साथ चाहे वे कितनी ही सुन्दर क्यों न हों स्वयं निर्वस्त्र होकर लेट सके और इसके बावजूद भी किसी प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न न हो. जब कृष्ण ने गोपियों के वस्त्र चुराकर उन्हें निर्वस्त्र कर दिया था, कथा इस प्रकार बताती है, तब उनमें न कोई शर्म का भाव उत्पन्न हुआ और न ही कोई कामवासना. परन्तु वे भगवान् कृष्ण के सामने भक्ति में लीन होकर खड़ी रही."[1]

अनुभव : गांधी जी पहले तो चुपचाप लड़कियों को निर्वस्त्र करके अपने साथ सुलाते रहे. परन्तु जब नवाखली के दौरे में उनके निजी सचिव **निर्मल कुमार बोस** ने उनकी शैतानियत का भांडा फोड़ दिया और उनके इस **कुकर्म** की निंदा की और रोष प्रकट करते हुए निजी सचिव पद को छोड़ दिया तो इस बदचलनी को "ब्रह्मचर्य प्रयोग" का नाम दिया गया. स्वयं गांधी के अनुयायियों व अनेक गांधी भक्तों ने उनके ब्रह्मचर्य प्रयोगों की कड़ी निंदा की. सरदार वल्लभ भाई पटेल ने उन्हें इस काम से रोकने के लिए पत्र भी लिखा. परन्तु गांधी जी को तो ब्रह्मचर्य प्रयोगों की आदत पड़ चुकी थी. इसलिए गांधी जी ने अपने भक्तों-अनुयायियों को फटकारते हुए कहा :

> **"चाहे सारा ही संसार मुझे त्याग दे, मैं इस काम का त्याग नहीं कर सकता जो मेरे लिए एक सच्चाई है, हो सकता है यह ब्रह्मचर्य प्रयोग एक भ्रम-जाल ही हो, यदि ऐसा भी हो तो भी मैं यह साधना स्वयं ही करूंगा."**

गांधी जी के इस प्रकार के व्यवहार को देखते हुए ही हिन्दोस्तान के वायसराय लार्ड वेवल को यह कहना पड़ा था : **"गांधी ने बेहूदगी-अशिष्टता को भी कोमल कला बना दिया है."**

(देखें पुस्तक-The Viceroy's Journal)

स्त्री स्वइच्छा के विपरीत अपने पति की कामवासना तृप्त करने के लिए बाध्य नहीं है." (देखें पुस्तक : गांधी विचार दोहन, पृष्ठ 43)

ऐसे विचार प्रकट करके भी गांधी जी ब्रह्मचर्य प्रयोगों की आड़ में व्यभिचार करते रहे.

उन्मुक्त कामाचार

जिन लड़कियों के साथ, उनकी पूर्ण युवावस्था में, गांधी जी ने 'ब्रह्मचर्य प्रयोग' किए उनके साथ अमरीका स्थित प्रसिद्ध लेखक **वेद महता** ने स्वयं बातचीत की और उनके कथनों पर आधारित गांधी जी के साथ किये ब्रह्मचर्य प्रयोगों की कहानियां अपनी पुस्तक "**महात्मा गांधी और उनके भक्त**" (Mahatma Gandhi and his Aportles) में प्रस्तुत की हैं. उन द्वारा कहे गए कुछ कथन इस प्रकार हैं :

रेहाना तिआब जी : रेहाना को महात्मा गांधी ने "**मिसरी जैसा फूल**" कहा है, रेहाना ने गांधी जी के साथ अपने ब्रह्मचर्य प्रयोगों के संबंध में बताते हुए कहा है, "पूर्व जन्मों की अवतार-अवस्था में मैंने इतना भोग-विलास किया है कि अब मैं एक पत्थर की भांति काम-रहित हो गई हूं. बापू (गांधी जी) सब कुछ जानते थे परन्तु फिर भी वे मेरे पुरुषों के साथ प्राचीन भोग-परंपरा अनुसार ब्रह्मचर्य प्रयोगों के संबंध में चिंतित रहते. एक बार उन्होंने मुझे अपने एक रोगी के साथ सहवास करने के कारण फटकार भी लगाई थी... रोगी की पत्नी मर चुकी थी और वह काम में अंधा हो कर अपनी ही बेटियों के पीछे व्याकुल होकर भागता था. मैं लगातार एक सप्ताह उसके साथ निर्वस्त्र होकर सोई. जिसके आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए. उसकी बीमारी जाती रही. बाद में गांधी जी भी स्त्रियों के साथ प्रयोग करते हुए, उन्हें भी अद्भुत परिणाम देखने को मिले, मेरा ल्यूकॅडरमा (Leucoderma-श्वेत कुष्ठ) का रोग मेरी अधिक भोग विलास की भूख के कारण ही है."

डॉ. सुशीला नायर : नायर ने बताया : "कुमारी मनु के सामने आने से पहले मैं गांधी जी के साथ सोया करती थी. कभी वे कहा करते थे-मेरी कमर में दर्द है, इस पर थोड़ा भार दो, इसलिए मैं कुछ भार डालती और कभी उनकी कमर पर लेट जाती. शुरू में इसे '**ब्रह्मचर्य-प्रयोगों**' का नाम देने का प्रश्न ही पैदा नहीं हुआ. यह तो प्राकृतिक चिकित्सा का ही एक भाग था. बाद में जब लोगों ने लड़कियों-कुमारी मनु के साथ, कुमारी अभा के साथ और मेरे साथ शारीरिक स्पर्श संबंधी तरह-तरह के प्रश्न पूछने आरम्भ किये तब 'ब्रह्मचर्य-प्रयोग' विचार की सृजना हुई."

कुमारी मनु : इस लड़की ने अपने कथन में वेद महता से कहा, "सबसे पहले मैं गांधी जी के साथ उनके निकट सफ पर सोई. ऐसा करना मुझे बुरा नहीं लगा. एक दिन आधी रात को गांधी जी ने मुझे जगा लिया और बातें करने लगे. तब से मैं उनके साथ सोने लग पड़ी. मेरी आयु तब उन्नीस वर्ष की थी और उनके साथ सहवास मैंने नवाखली भ्रमण काल में आरम्भ किया."

अभा : अभा के पति ने गांधी जी के साथ इस बात को लेकर झगड़ा भी किया कि वह उसकी नवविवाहिता स्त्री (पत्नी) को खराब कर रहा है परन्तु गांधी जी अभा को साथ सुलाने से बाज़ न आए. अभा ने अपने ब्रह्मचर्य प्रयोगों के संबंध में इस प्रकार कहा : "यह बात प्राय: पता थी कि सुशीला नायर गांधी जी के निकट सोती थी, जब मैं सोहल वर्ष की थी तब सुशीला नायर ने मुझे गांधी जी के निकट सोने के लिए कहा. मैंने सोचा उसे सर्दी लगती होगी और इसलिए उन्हें सर्दी से बचाने के लिए मुझे उनके साथ सोने के लिए कहा गया है. इसलिए मैं उनके साथ कपड़े पहने हुए ही लेटी रहती थी. परन्तु दो वर्ष बाद नवाखली में, मैं उनके निकट लगातार सोने लगी. गांधी जी ने मुझे यह अवश्य कहा : 'कपड़े उतार दो' परन्तु जहां तक मुझे याद है मैं पेटीकोट और चोली पहने रखती थी, मुझे अब याद नहीं कि गांधी जी कपड़े पहने रहते थे अथवा नहीं."

मीराबेन (एम. सलाड) : अपनी एक गोरी शिष्या को महात्मा गांधी ने एक पत्र इस प्रकार लिखा : "जब भी तुम मेरे साथ ठहरती हो, तुम्हारी उपस्थिति मुझे परेशान करती है, तुम चाहे कुछ भी करती और मैं स्वयं को नियन्त्रित करने का कितना ही प्रयास करता, हम आपस में झगड़ते ही रहते." मीरा की ऐसी समीपता की चर्चा करते हुए गांधी ने इस प्रकार लिखा : "तुम सारा समय मुझ पर प्रेम वर्षा करती रही, मैं स्वयं को गबन का दोषी महसूस करता रहा और अल्प बहाने पर भी भड़क उठता था, अब जबकि तुम मेरे पास नहीं हो, मेरे अवगुण मुझ पर ही सवार हैं कि मैं तुम्हें इस भांति क्यों फटकारता रहा परन्तु मैं जब तक तुम्हारी सेवायें प्राप्त करता रहा मैं गर्म राख पर लेटता रहा."

सरोजनी नायडु : रजनी शाहानी ने अपनी पुस्तक '**मिस्टर गांधी**'

(Mr. Gandhi) के पृष्ठ संख्या 186 पर भारतीय-कोकिला सरोजनी नायडु का उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया है, "जब सरोजनी नायडु गांधी जी के पास होती तब वे बहुत प्रसन्न रहते. वह क्या कारण था जिसने इस अनुपम नारी को सब कुछ छोड़ कर महात्मा गांधी की पैरवी का अनुगमन करने का आकर्षण उत्पन्न किया, क्या यह देश प्रेम था ? उत्तर है-हां, परन्तु जो कुछ आमतौर पर संदेह किया जाता है, इसके पीछे और भी बहुत गहराई थी. गांधी जी ने जिस प्रकार कई अन्य को तृप्त किया उसी प्रकार ही नायडु को भी कोमलता प्रदान की और उसकी काम-पूर्ति की. प्राकृतिक रूप से असन्तुष्ट-अप्रसन्न स्त्रियां और दीवानापन की शिकार-विक्षिप्त नारियां गांधी जी के इर्द-गिर्द इस प्रकार जमा हो जाती थी जैसे मधु मक्खियां-फूलों के आसपास." **रोबरट बरनेज** ने सरोजनी को, अपनी पुस्तक '**नगर फकीर**' में, गांधी जी का दरबारी भांड (भंड) कहा है.

"गांधी ने अपने ब्रह्मचर्य प्रयोग कई सुन्दर लड़कियों व स्त्रियों के साथ किए, ऐसी कुछ देवियों में कुछ इस प्रकार हैं-राज कुमारी अमृत कौर, सुचेता आदि जो बाद में आचार्य कृपलानी की पत्नी बनी, प्रभा देवी, जो बाद में जय प्रकाश नारायण की पत्नी बनी."

गांधी जी के नवाखली में निजी सचिव प्राध्यापक निर्मल कुमार बोस ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक "गांधी के साथ मेरे दिन" (My days with Gandhi) में ब्रह्मचर्य-प्रयोगों की आड़ में किए जाने वाले व्यभिचार का रहस्योद्घाटन किया. बाद में गांधी जी का यह चमत्कार स्वतः उजागर हो गया.

भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार डॉ. अंबेडकर ने अपने एक लेख में लिखा था : "यदि किसी ऐसे पुरुष को जिसके मुंह में राम और बगल में छुरी हो, महात्मा की उपाधि दी जा सकती है तो गांधी जी सचमुच महात्मा थे." बी.बी.सी. लन्दन के एक प्रसारण में डॉ. अंबेडकर ने कहा था : "चारित्रिक रूप से भी गांधी महात्मा नहीं थे."

उपरोक्त-विभिन्न संदर्भों व वक्तव्यों के बाद भी क्या गांधी के Licentious Person यानी एक कामुक व्यक्ति होने के संबंध में कोई संदेह शेष रह जाता है ?

3

सत्य, केवल सत्य, सारे अध्यात्मवाद का सार कहा जाता है. इसलिए किसी विद्वान ने कहा : 'God is Truth' अर्थात् परमात्मा सत्य है. परन्तु गांधी जी ने सत्य के सिद्धांत पर और अधिक बल देने के लिए इस कहावत को ही बदल दिया. उन्होंने बार-बार लिखा : "Truth is God" अर्थात् सत्य ही परमात्मा है.

गांधी जी स्वयं कितना सत्य बोलते व लिखते थे ? गांधी साहित्य के प्रसिद्ध शोधकर्त्ता विद्वान **टी.के. महादेवन** का कहना है : "गांधी की आत्मकथा (सत्य की खोज) असत्यों की पोटली समान है."

गांधी के झूठों-असत्यों की संख्या इतनी अधिक है कि यदि उनकी व्याख्या करने लगे तो एक बहुत बड़ी पुस्तक तैयार हो सकती है. इसलिए यह सिद्ध करने के लिए कि **गांधी स्वयं झूठा था** निम्नलिखित कुछ उदाहरण ही प्रस्तुत किए जाते हैं :

पहला उदाहरण : गांधी इंग्लैंड में जब वे विद्यार्थी थे, बार-बार झूठ बोलते रहे. जैसे वह उस समय (1888 ई. में) एक पुत्र का पिता था परन्तु स्वयं को अविवाहित ही बताता रहा. ताकि गोरी-अंग्रेज़ लड़कियां उसमें रुचि लेना न छोड़ दें. गांधी ने इंग्लैंड में रहते समय तीन प्रतिज्ञाएं की थी : मांस न खाना, मदिरा पान न करना और भोग विलास न करना. अपनी आत्म कथा में गांधी ने कहा है कि मैं इस बात से आश्वस्त हूं कि मैं अपनी मांस व शराब संबंधी प्रतिज्ञा को पूरा कर पाया. परन्तु अपनी तीसरी प्रतिज्ञा-भोग-विलास न करना के संबंध में चुप्पी साध गए. क्यों ? स्वयं गांधी जी ने उत्तर दिया, "कुछ बातें ऐसी होती हैं जो पुरुष और उसके कर्त्ता के मध्य ही रहती हैं."

दूसरा उदाहरण : गांधी ने अपनी दक्षिण अफरीका यात्रा को भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया : जैसे अश्वेत लोगों का केवल वही एक मसीहा होता है. जबकि सच्चाई यह है कि भारत में एक असफल वकील के रूप में काम करने वाला गांधी अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी के लिए वकील के रूप में काम करने व धन कमाने और अपने 'भाग्य जगाने' के लिए दक्षिणी अफरीका गया.

अपनी दक्षिणी अफरीका यात्रा के संबंध में गांधी ने स्पष्ट रूप से यह झूठ कहा कि अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी के साथ अन्याय होता था. वास्तव में अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी तस्करी का धंधा करती थी. गांधी फीस व धन के लालच में तस्करों को बचाने दक्षिणी अफरीका गया.

तीसरा उदाहरण : गांधी ने 1921 ई. में "तिलक स्वराज फण्ड" के नाम पर एक करोड़ तीस लाख से अधिक रुपये इकट्ठे किये. इस प्रकार उन्होंने करोड़ों रुपये अछूतद्धार के नाम पर जमा किये. जिस उद्देश्य के लिए धन इकट्ठा किया गया, उसके लिए खर्च नहीं किया गया. इस प्रकार गांधी ने सैंकड़ों दानियों के साथ झूठ बोला.

चौथा उदाहरण : गांधी ने दूसरी गोलमेज़ कान्फ्रेन्स के समय लन्दन में यह झूठ कहा कि अछूत हिन्दूइज़्म का अभिन्न अंग हैं जबकि यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि सवर्ण हिन्दुओं ने कभी भी अछूतों को अपने धर्म-भाई अथवा समाज के अंग नहीं समझा.

पांचवां उदाहरण : गांधी ने सुभाष बोस के संबंध में लिखा है : "मैं बोस को अपने पुत्र के समान समझता रहा हूं." परन्तु इस बोस को कांग्रेस के प्रधान पद से उतारने के लिए गांधी ने व्रत रखा और इस प्रकार अपमानित करके गांधी और उसके अनुयापियों ने देश त्याग के लिए बाध्य किया, वह एक पृथक् दर्दनाक बल्कि शर्मनाक कहानी है.

छठा उदाहरण : गांधी आजीवन 'अहिंसा' का शोर मचाते रहे. जिस प्रकार बोस अच्छे चरित्र को परमात्मा का स्थान देते थे, उसी प्रकार गांधी सच व अहिंसा को परमात्मा का रूप कहते व लिखते थे. अहिंसा के इस अवतार ने प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध में सहयोग किया. प्रथम विश्वयुद्ध में तो वह सैनिकों की भर्ती भी करवाता रहा. जब भारत ने कश्मीर में सेना भेजी तब भी गांधी ने इसका समर्थन किया. एक ओर अहिंसा का प्रचार, दूसरी ओर हिंसा, तबाही में भागीदार, रक्त रंजित, जन-संहार में भागीदार. इससे बड़ा झूठ और क्या हो सकता है ?

सातवां उदाहरण : शहीद भगत सिंह को फांसी की सजा हुई. वह दो वर्ष से अधिक समय जेल में सड़ता रहा. गांधी जी लोगों को यह संकेत देते

रहे कि वे भगत सिंह व अन्य शहीदों (क्रांतिकारियों) को फांसी से बचाने के लिए ज़मीन आसमान एक कर रहे हैं. गांधी ने जन-साधारण को यह बताया कि उन्होंने हिन्दोस्तान के वायसराय से ज़ोर देकर कहा है कि वे भगत सिंह और उनके साथियों की सज़ा को आजीवन कारावास में बदल दें. परन्तु सच्चाई यह है कि गांधी ने वायसराय हिन्द के साथ भगत सिंह और उसके क्रांतीकारी साथियों के संबंध में सख्ती से तो क्या साधारण रूप से भी कोई बातचीत नहीं की. इस संबंध में उस समय के वायसराय हिन्द और भगत सिंह के साथी मन्मथनाथ गुप्त की पुस्तकें पर्याप्त प्रकाश डालकर गांधी के कोरे झूठ अपितु क्रांतिकारियों के साथ उनकी गद्दारी को प्रकट करती हैं. गांधी ने वायसराय से कहा : "अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन से पूर्व भगत सिंह व उनके साथियों को फांसी दे दी जाए."

आठवां उदाहरण : गांधी जी मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद और खान गुफार खां को बार-बार यह वचन देते रहे कि वे भारत के विभाजन को कभी भी स्वीकृति नहीं देंगे. बल्कि गांधी जी ने कहा : "पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा." परन्तु ऐसे शब्द कहने वाले गांधी जी ने कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में स्वयं उपस्थित होकर सदस्यों को भारत के विभाजन को स्वीकृति प्रदान करने के लिए प्रेरित किया. गांधी जी के इस झूठ का मौलाना आज़ाद ने अपनी पुस्तक India wins Freedom (भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की) में पर्दा पाश किया है यानी रहस्योद्घाटन किया है.

नौवां उदाहरण : गांधी जी के अनुयायियों (शिष्यों) को संदेह था कि पहले आंदोलनों की भांति गांधी जी 1942 के **'भारत छोड़ो'** लहर को आरम्भ करके उन्हें फिर धोखा देंगे. इसलिए गांधी जी से पूछा गया : "क्या आप इस बार चौरा-चौरी काण्ड की भांति कोई घटना हो जाने पर Quit India (भारत छोड़ो) लहर वापस तो नहीं ले लोगे." 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में हज़ारों लोग जेल गए, सैंकड़ों शहीद हुए, आन्दोलनकारियों की लाखों रुपयों की सम्पत्तियां जब्त कर ली गईं, उन्हें अमानवीय यातनायें दी गई. गांधी जी ने अपना वचन भंग कर आंदोलन वापिस ले लिया और इतनी कुर्बानियों को मिट्टी में मिलाकर रख दिया.

दसवां उदाहरण : गांधी जी ने आजीवन यह प्रचार अपने भाषणों और लेखों द्वारा किया कि '**पूंजीपतियों के पास धन तो अमानत रूप में है.**' वे तो ट्रस्टी अर्थात् रक्षक हैं. ऐसा प्रचार करने वाले गांधी ने कितने पूंजीपतियों को प्रेरित किया कि वे अपने पास वाले धन का उपयोग अमानत के रूप में करें, क्या शोषितों-मर्दों व औरतों के साथ उसके वचन मिथ्या सिद्ध नहीं हुए ?

ग्यारवां उदाहरण : 1946 में भारत को स्वतंत्र देखने की इच्छा देश की शाही सेना में भी पैदा हो चुकी थी. इसलिए भारत की समुद्री सेना ने बम्बई, मद्रास और कराची आदि बारह समुद्री तटों पर विद्रोह कर दिया. यह विद्रोह 18 फरवरी, 1946 को आरम्भ हुआ जिसमें 20 हज़ार से अधिक समुद्री सेना के कर्मचारियों ने भाग लिया, **केवल तीन ही दिनों में सैंकड़ों सैनिक गोली का निशाना बना दिए गए. एक दिन में 250 को मौत के घाट उतार दिया गया.**

गांधी जी और दूसरे कांग्रेसी नेताओं ने न केवल शाही भारतीय समुद्री सेना (Royal Indian Navy) के विद्रोही कर्मचारियों के वीरतापूर्ण विद्रोह का विरोध किया और कड़ी आलोचना की बल्कि उन्हें आत्मसमर्पण के लिए भी कहा. गांधी जी के नेतृत्व में सरदार वल्लभभाई पटेल ने घोषणा की कि यदि सैनिक आत्मसमर्पण कर दें तो कांग्रेस उनके साथ अन्याय नहीं होने देगी. परन्तु जब सैनिकों ने 23 फरवरी, 1946 को कांग्रेस नेताओं के कहने पर हड़ताल समाप्त कर दी तो अंग्रेज़ों ने सैनिकों पर कहर बरसाया. उन्हें अमानवीय यातनाएं दी परन्तु कांग्रेसियों ने स्पष्ट रूप से उनकी कोई सहायता नहीं की, इस प्रकार सैनिकों की सहायता का वचन देकर उनकी सहायता न करना गांधी जी का ग्यारवां झूठ था.

उदाहरण तो ओर भी बहुत से दिए जा सकते हैं परन्तु यह सिद्ध करने के लिए इतनी ही पर्याप्त हैं कि गांधी पाखण्डी ही नहीं झूठा भी था.

भारत के प्रसिद्ध लेखक व पत्रकार **ख्वाजा अहमद अब्बास** ने गांधी जी के व्यक्तित्व के संबंध में कितना ठीक लिखा है : "**गांधी जी कोई अलौकिक पुरुष अथवा अवतार नहीं थे. वह मूल रूप से एक चालाक राजनीतिवान् था. उसने अछूतों को 'हरिजन' का नाम अवश्य दिया परन्तु उन्हें दलितों**

की कोई चिन्ता नहीं थी."

"अछूतों के संब्रंध में उनकी चिंता वहीं तक ही सीमित थी कि वे इसाई या मुसलमान अथवा बुद्ध धर्म को अपनाकर हिन्दुओं की संख्या कम न कर दें. वे मुसलमानों के न तो पक्ष में थे, न वे इस्लाम को समझते थे और न ही वे इस्लाम का सम्मान करते थे. यह उनकी राजनैतिक चालाकी थी कि जो किसी न किसी भांति मुसलमान हिन्दू धर्म में नहीं तो कम से कम (हिन्दू श्रेणी) कांग्रेस के जाल में फसे रहें...वह सच्च का समर्थक नहीं था. वह अवसरानुसार बदलता रहता था."[2] क्या गांधी जी जैसे नेता जिनका चरित्र इस पुस्तक में संक्षिप्त रूप में लिखा गया है, किसी देश अथवा समाज का आदर्श अथवा नेता बनने के योग्य हो सकते हैं ? स्वयं गांधी जी के पौत्र **अरुण गांधी** ने इस प्रकार कहा है : "गांधी जी जैसे एक साधारण पुरुष को केवल इसलिए आध्यात्मिकता के शिखर पर पहुंचा देना ताकि श्रद्धालुजन उनकी महिमा के प्रभाव के आवरण में अपने स्वार्थ सिद्ध करते रहें, एक प्रकार का अपराध है."[3]

गांधीवाद का सर्वनाश

गांधी-साहित्य के प्रसिद्ध शोधकर्त्ता विद्रान् **टी.के. महादेवन** ने कहा है, "आधुनिक भारत को अपनी जकड़ में लेने वाली सबसे बड़ी मुसीबत थी, मोहनदास कर्मचन्द गांधी." केवल महादेवन ही गांधी जी के संबंध में ऐसे विचार नहीं रखते. कई अन्य विद्वानों ने भी गांधी जी की कड़ी आलोचना की है. गांधी जी के एक तर्क को काटते हुए **डॉ. अंबेडकर** ने कहा था, **"ऐसा तर्क या तो कोई पागल दे सकता है या जंगली."** **केवल लाल** का विचार है कि गांधी या तो मूर्ख था अथवा सनकी. **गलोरने बैलटन** ने लिखा है : "गांधी न तो कोई बड़ा विद्वान था न बुद्धिमान." गांधी के संबंध में **एम.एन. राय** का विचार था : "धार्मिक और संस्कृति को पुनः जीवित करने वाले के रूप में गांधी जी सामाजिक रूप से एक अतीत के प्रति मोह रखने वाले पलायनवादी नेता थे चाहे वे राजनैतिक रूप से कितना ही क्रांतिकारी होने का प्रदर्शन क्यों न करते हो, वे प्रतिक्रिया की शक्तियों का सबसे तीव्र व भयंकर प्रदर्शन थे."

रजनी पाम दत्त ने राय से भी अधिक सुस्पष्ट लिखा है. वह कहते हैं :

"गांधी क्रान्ति के लिए झगड़ालू कभी भी न होने वाले विनाश का अगुआ और बर्जुआ अमीर समाज का मोहरा था...गांधी राष्ट्रीय आंदोलन के नेता के रूप में असफल रहा क्योंकि वह उन जातीय विशेष हितों व ईष्याओं से पृथक नहीं हो सका जिनमें उसका पालन पोषण हुआ था. रक्तपान करने वाली (रक्त चूसक, शोषक वर्ग) और पूंजीपति अपने इर्द-गिर्द शस्टजाल, अंध-विश्वास, परंपरा, मज़हब, धर्मोद्धार आदि का मायाजाल पैदा कर लेते हैं ताकि जन-साधारण से उनकी ओर से की जा रही छीना झपटी छुपी रह सके."

(**संदर्भ** : Modern India by Rajni Palme Dutt, page 80)

शोषक वर्ग के संबंध में जो कुछ दत्त ने लिखा है, गांधी जी ने लगभग वैसा ही किया. कम्युनिस्टों की ओर से प्रकाशित पुस्तक 'दा महात्मा' (The Mahatma Marxist Evaluation) की भूमिका में कहा गया है : "गांधी जी ने तीन बार देश व्यापी-राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन चलाए और तीनों बार उन्होंने बर्तानिया से समझौता किया. **कम्युनिस्ट इन समझौतों को गद्दारी समझने लग पड़े.**"

रूसियों ने गांधी बाबत कहा :

"GANDHI...is a reactionary who hails from Bania caste...betrayed the people and helped the imperialists against them...aped the ascetics...pretended in a demagogic way to be a supporter of Indian independence and an enemy of the British...and widely exploited religious prejudices."[4]

Great Soviet Encyclopaedia

अर्थात् : गांधी प्रतिक्रियावादी है जो बनिया जाति से संबंध रखता है. उसने जनता से विश्वासघात किया और उसके विरुद्ध साम्राज्यवादियों की मदद की. उसने साधुओं, सन्यासियों की नकल की, उनका अनुकरण किया. उसने नेतागिरी के तौर पर भारत की आज़ादी और बर्तानिया की शत्रुता का दिखावा किया. गांधी ने धार्मिक पक्षपातों को खूब इस्तेमाल किया.

गांधी जी से जब एक सज्जन ने पूछा : "आपकी समाधि पर लगाई जाने वाली तख्ती पर क्या लिखा जाए ?" तो उन्होंने एक पत्र द्वारा उत्तर देते हुए बताया-यह लिखना : "**इसने यत्न किया परन्तु असफल रहा.**" इस प्रकार

असफल व्यक्ति और उसके थोथे-आधार व तत्त्वहीन-सिद्धांतों को वैसे ही शब्द जाल अथवा पाण्डित्य प्रदर्शन के साथ सफल सिद्ध करते रहना, यही नहीं, उसे सब बीमारियों की एक ही प्रभावशाली औषधि बताते फिरना, मूर्खता नहीं तो और क्या है ?

यदि भारतवासी उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होना चाहते हैं तो उन्हें गांधी व गांधी दर्शन को पूर्णत: भूलना होगा. गांधीवाद का समूल उन्मूलन करना होगा. गांधी जी के नाम पर चल रही 'दुकानें' बंद की जानी चाहिए. उनके नाम की आड़ में श्रमिकों का शोषण समाप्त होना चाहिए. गांधीवादी साहित्य कूड़े के ढेर की भांति है. कोई बुद्धिमान अपने घर में गंदगी नहीं रखता, इसलिए ऐसे साहित्य को अपने उचित स्थल पर पहुंचाने की आवश्यकता है. डॉ. भीम राव अंबेडकर के शब्दों में : "Gandhi age is the dark age of India"[5] **अर्थात्** : गांधी युग भारत का अन्धकार युग है.

देशवासियों ! **अंधकार भरे युग से बाहर आओ, बुद्धिवाद व नैतिकता के उज्जवल युग में प्रवेश करो तभी तुम्हारी सामाजिक व आर्थिक दासता की बेड़ियां कट सकती हैं.**

संदर्भ

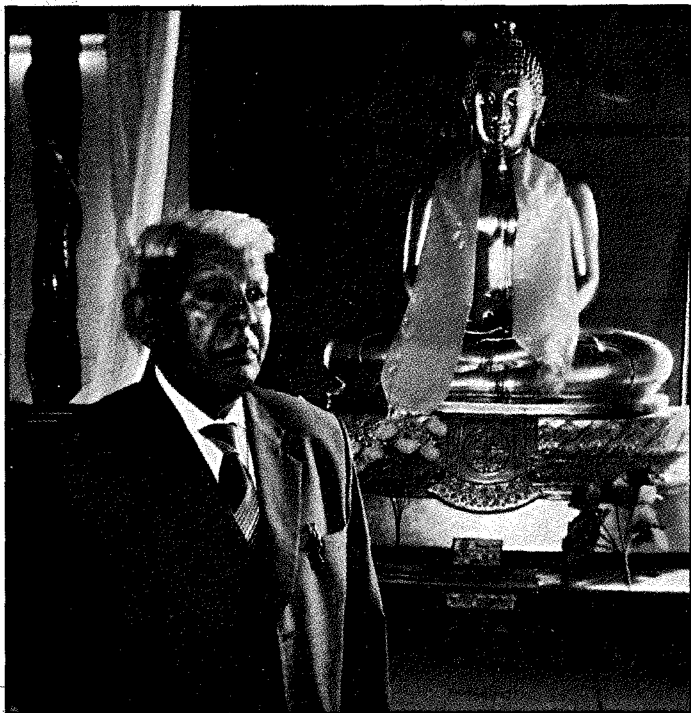
1. Mahatma Gandhi and His Apostles, By Ved Mehta, page 196.
2. Monthly Mirror Bombay, Nov. 1981, page 7.
3. Monthly Mirror Bombay, Nov. 1981, page 103.
4. Quoted in Mainstream Weekly, New Delhi, dated 3 October, 1998, page 14.
5. महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक, Dr. Baba Saheb Ambedkar Writings and Speeches, Vol. 1, page 352.

प्रकाशक : एल. आर. बाली, संपादक, भीम पत्रिका, ई.एस. 393 ए, आबादपुरा, जालंधर-144003 दूरभाष : 0181-2272603 ने बैरन प्रिंटर्ज़, जालंधर से मुद्रित.

श्री रतन लाल सांपला

संस्थापक, बुद्ध विहार ट्रस्ट

सोफी पिंड, ज़िला जालंधर (पंजाब)



जिनकी प्रेरणा व सहायता से

ये पुस्तक प्रकाशित हुई है.